केस स्ट्डी

संवाद के साथ रचनात्मक कार्यों से बदलाव

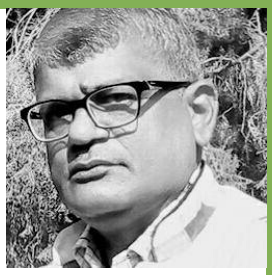

कौन कहता है! सफलता नही मिलती है अपने संघर्ष, संवाद और रचना के सिद्धान्त पर आगे बढ़ते हुए शनैः शनैः कदम दर कदम बढ़ाते हुए सर्वप्रथम संघर्ष किया जिसमे जनादेष 2007 से लगातार जनांदोलन तक कदम मिलाया। पैदल चले एक समय का खाना खाया रोड पर एक चटाई बिछाकर नेषनल हाईवे पर ही अपनी रात गुजारी पानी भरपूर न मिलने के कारण दो तीन दिन के अन्तराल से नहाने का इन्तजाम किया गया तब कही जाकर नहाने की व्यवस्था हो पायी। लेकिन कदम ताल टूटने नही दिया गया लगातार संघर्षो के बाद भी पंचायत से लेकर ब्लॉक, जिला, राजधानी भोपाल व दिल्ली तक अपना संवाद कायम रखकर बातचीत करते ही रहे इस क्रम में सफलता मिली और रचना के कार्य प्रारम्भ किये।

मै अभी दो तीन माह से दमोह जिले के गांव गांव मे घूम रहा था इसके पहले महाकौषल के डिण्डौरी, मण्डला, बालाघाट की सफलताओं की कहानियां आप लोगों को सुना चुका था। परन्तु दमोह के जिले मे चीलघाट के अलावा भी कई बड़ी बड़ी सफलताएं है जिनको मै नजदीक से देखा हूं तेन्दूखेड़ा ब्लॉक के धनगौर, बमनौदा, ससनाखुर्द, भैसा, पटेरियामॉल, सेहरी एवं फूलर आदि सैकड़ो गांवों मे वनाधिकार के तहत हजार एकड़ जमीन प्राप्त हुई है मैने उक्त 8-10 गांवों का वनाधिकार अधिनियम के तहत 1275 एकड़ जमीन का हक प्राप्त हुआ है। इन जमीन पर नदियो से, कुंओं से, तालाबों आदि के माध्यमों से सिंचाई कर जिस फसल की खेती की जा रही है वह हमें चैकाने वाले आकड़े देती है। जिन खेतो पर कब्जा के नाम पर एक फसली खेती करते आ रहे थे की हमारा कब्जा बना रहे और वर्षा के समय तक के लिए घर मे खाने का अनाज हो। और बाकी दिनों मे पलायन कर अपनी आजीविका चलाने वाले आदिवासी परिवारों मे आज अनाज रखने के लिए जगह सुनिष्चित करने और मकान बनाने का समय आ गया है।

बमनौदा गांव मे नन्दलाल सिंह के खेतो को देखकर मन प्रफुल्लित हो जाता है, कि जहां पर स्प्रिंकलर सिस्टम से खेतो की सिंचाई उन खेतो मे हो रही है जिन खेतो से धान काटकर गेहूं, चना बोने की तैयारी की जा रही है। और घर के आसपास हरी सब्जियों का बगीचा, फलदार पेड़ो का लगाना, फूलों की खेती तक जा पहुंचे है। गांव के किसानों से चर्चा करने पर कहते है कि हम तो देषी धान की ही बुवाई करते है जिसमे प्रमुख रूप से गाजाकली है। और आज भी हम लोग अपने खेतो मे रासायनिक खाद का उपयोग नही करते। अपने घरों मे उपलब्ध गोबर खाद से बनाई गई खाद का ही उपयोग करते है यह बात उस समय और देखने और सुनने को मिली जब मान सिंह यादव ने अपने घर का बनाया हुआ घी दिखाया ऐसे कई उदाहरण सामने आ रहे है। अभी अभी नए तरीके से काम की शुरूआत जो किये है तो हम मानते है की ऐसे कई उदाहरण देखने को मिलेंगे। धनगौर एवं भैसा गांव मे जब गांव की बैठक कर ही रहे थे, तो बैसाखू आदिवासी ।ने कहा की हमे तो संगठन के द्वारा जो ताकत मिली है उसको हम जिन्दगी भर नही भूल सकते क्योंकि आज से 8-10 वर्ष पहले तक वर्ष मे 8-10 माह के लिए बाहर काम करने जाते थे जहां पर न हमारे बच्चे पढ़ पाते थे न ही हम अपने घरों को ठीक से रख नही पाते थे परन्तु वनाधिकार अधिनियम के तहत हमारे आर्थिक स्थिति मे जो सुधार हुआ है वह काबिले तारीफ है। अब हम अपने घरो मे रहते है घर बनाते है बच्चों को पढ़ाते है। अपने खेतो मे खेती कर सम्मान पूर्वक खेती कर अपनी रोजी रोटी चला रहे है।

जब पटेरिया माल के खिलान सिंह के घर के चैगाने मे बैठे थे तो खड़े होकर दिखाया की वह जमीन है जो 65 आदिवासी परिवारो को लगभग 280 एकड़ के आसपास की जमीन का हक प्राप्त हुआ है। आज हमारे गांव मे इस जमीन की कीमत उसे 4 लाख प्रति एकड़ है। यदि हम 3.50 लाख प्रति एकड़ भी लगाते है तो 9 करोड़ 80 लाख के आसपास की जमीन का मालिकाना हक प्राप्त हुआ है। और जब से पट्टा प्राप्त हुआ है तभी से सिंचाई के साधन बना लेने से पहले एक फसली मे उत्पादन उसे 4 क्विंटल होता था सिंचाई के बाद दो फसली मे एक सीजन मे 7-8 क्विंटल प्रति एकड़ हो जाता है तो दोनो सीजन का 14-15 क्विंटल अनाज प्रति एकड़ प्राप्त होता है। यदि एक वर्ष की कीमत 1500 प्रति क्विंटल निकलते है तो 4200 क्विंटल अनाज पैदा होता है और 1500 रूपये के भाव से 63 लाख रूपये के आसपास होता है। यह एक वर्ष के उपज का आंकड़ा है। यदि पिछले 5 वर्ष का निकाले तो कई करोड़ो मे जाता है तथा इसके अलावा यह उदाहरण सिर्फ एक गांव के 280 एकड़ जमीन का है जबकि 1275 एकड़ का निकालेगें तो कई करोड़ो मे होगा।

यह है सामाजिक बदलाव के उदाहरण है, जहां पर उन आदिवासी परिवारों के रहन सहन मे बदलाव बच्चों के पढ़ाई का स्तर और महिलाओं को अपने घरो मे रहकर अपना काम अपने खेतो मे उगाई साग सब्जी का खाना बनाना और खाना इस सामाजिक बदलाव से आर्थिक रूप से मजबूत हो रहे हैं । यहां के लोगों के चेहरो से साफ झलकता है। इस इलाके को देखकर संघर्ष, संवाद व रचना के काम साफ दिखाई दे रहे है। जहां पर आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक बदलाव अपने आप आ रहे है।